रात्रिक्लास 19-10-68 ओमशान्ति शिव बाबा और वरसा याद है?

बच्चों को समाचार सुनाने वाला तो है बेहद का बाप। बेहद का बाप बेहद का समाचार सुनाने वाला। जो कोई समझा न सके। ऊपर मूलवतन से लेकर फिर सूक्ष्मवतन का भी समाचार सुनाते हैं। समझाते हैं सूक्ष्मवतन में कुछ है नहीं। सिर्फ सा० है। ब्रह्मा विष्णु शंकर वहां सूक्ष्मवतन में हो नहीं सकते। वह सिर्फ है सा०। ब्रह्मा काभी सा० होता है अव्यक्त का। व्यक्त का भी दिखाया जाता है। झाड़ के पिछाड़ी में ब्रह्मा खड़ा है जब कि झाड़ जड़-जड़ीभूत है। और फिर कहते हैं ब्रह्मा देवता ... वही जो तमोप्रधान बनता है वही फिर तपस्याकर सतोप्रधान बनते हैं। जब कि फरिश्ता बन जाते हैं तो फिर सूक्ष्मवतन में दिखाते हैं। देवतायें तो सिर्फ सतयुग में होते हैं। डीटी रीलिजन है ही सतयुग में। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। तुम बच्चे तो भक्ति मार्ग से निकल आये हो। ब्रह्मा की अथवा ब्राह्मणों की रात। फिर ब्राह्मणों का दिन नहीं कहेंगे। फिर वही ब्राह्मण देवता बन दिन में जाते हैं। बाप आते हैं रात में। भक्ति की रात, ज्ञान का दिन। ज्ञान से दिन। ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। भक्ति में अज्ञान है ई इसलिये बाप आकर सदगति करते हैं। यह है दिन और रात का खेल। सतयुग में है एक भाषा। अभी तो कितनी अनेकानेक भाषायें हैं। बच्चों को समझना है हम पराये राज्य में थे। हमने अपना राज्य गंवाया। हमारे राज्य में एकभाषा एक धर्म था। बच्चे अच्छी तरह जानते हैं अपना राज्य हम स्थापन कर रहे हैं। कल्प2 करते हैं। तुम बच्चे श्रीमत पर सुखधाम स्थापन कर रहे हो। दुःख हर्ता, सुखकर्ता यह बाप की ही महिमा है। दुःख कलियुग में, सुख सतयुग में। अभी है पुरुषोत्तम सुगंम युग। है भी यह गीता गाया हुआ मैं कल्प के पुरु० संगम युगे2 आता हूं। ऐसे युगे2 नहीं। पुरुषोत्तम संगम युगे। यह है बेहद की पाठशाला। समझते हैं स्टुडन्ट्स हम सभी नम्बरवार ही पास होंगे। राजधानी में नम्बरवार होते हैं ना। यहां भी नम्बरवार है। वह है मृत्युलोक। तुम अमरलोक में जाने पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम सभी ब्राईडस हो। बाप ब्राईडग्रुम है। तुम सभी बच्चों को बाप श्रृंगार सजाकर कहां से कहां ले जाते हैं। विष्णुपुरी है ससुराल। यह है पियर घर। सतयुग में होता है एक बाप। फिर द्वापर में होते हैं सदों बाप। सतयुग में तो पारलौकिक बाप को याद नहीं करते हैं। भक्ति मार्ग में दो बाप हो जाते हैं। अभी संगम युग पर तुमको तीन बाप। पारलौकिक लौकिक अलौकिक। सतयुग में सुख ही सुख है। पारलौकिक बाप से सुख मिला था तब ही उनको पुकारते हैं। कि आकर पावन बनाओ। बाकी प्रजापिता ब्रह्मा अलौकिक बाप से कोई वरसा नहीं मिलता। पारलौकिक बाप से 21 जन्म सुख का वरसा मिलता है। लौकिक बाप से तो दुःख का ही मिलता है। यह है सभी वन्डरफुल बातें। बाबा भी वन्डरफुल है। वह सभी आत्माओं का बाप है। आकर के सारी दुनिया को नया बनवाते हैं तुम बच्चों से। गीता में तो रांग लिखा हुआ है। तुम बच्चे कोई हिंसा नहीं करते हो। तुम हो डबल अहिंसक। पहले डबल हिंसक थे। विकार में जाना बड़ी हिंसा है जिससे जन्म-जन्मान्तर दुख होता है। यह सभी अभी तुम बच्चे समझते हो। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग से कोई भी सदगति को नहीं पा सकते। उनसे गिरते हैं। भक्ति मार्ग दुर्गति मार्ग है। तुम कोई को बोलो तो बिगड़ पड़ेंगे। बड़ी ही युक्ति से समझाना होता है। नहीं तो तुमको नास्तिक समझते हैं। मैडचैप्स समझते। तुम फिर उनको डबल मैडचैप्स समझते हो। समझने की बातें हैं ना। माया रावण का प्रभाव भी देखो कितना है। कितने बड़े2 महल आदि हैं। यह सभी है माया का पम्प। माया कोशिश करती है। जो धनवान हैं वह समझते हैं हम तो स्वर्ग में हैं। बाबा फिर कहते अच्छा तुम इस स्वर्ग की खुशी में रहो। मैं हूं ही गरीब निवाज। बाप भी गरीब निवाज है। सोने की चिड़ियां थी। अभी आयरन एजेड है। यह बातें भी तुम समझते हो। मनुष्य तो लाखों वर्ष कह देते हैं। घोरअंधियारे में है ना। इसलिये गाया जाता है ज्ञान सूर्यप्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। तुम बच्चे अपना दिन स्थापन कर रहे हो। जहां कोई धक्के आदि खाने की बात ही नहीं। बाप आते हैं भक्ति का फल देने। तुम बच्चे क्या से क्या बन रहे हो। आगे भक्ति करते थे। एमआबजेक्ट का थोड़ेही पता था। अभी तो बाप कहते हैं तुमको यह बनने का है। यह है एमआब सत्यना० की कथा है ना। सभी तो नर से ना० बन न सके। भक्ति मार्ग की बातें ही अलग हैं। वह है रात। यह

हैदिन मैं जाने का ज्ञान। वह सत्यना० की कथा वा गीतासुनतेनीचे ही गिरते आये हो। प्रभाव कितना है हजारों मनुष्य जाते हैं सुनने लिये। वह अर्थ बैठ रसीला कर सुनाते हैं तो ढेर जाते हैं। गीतापाठी तो बहुत हो होंगे। जिन्होंने गीता पढ़ी होंगी। अभी बाप से डायरेक्ट राजयोग सीखते हो। वह है भक्ति मार्ग के लिये मनुष्यों की बनाई हुई गीता। बाप कोई शास्त्र थोड़ेही पढ़ते हैं। शिव बाबा शास्त्र पढ़ते हैं? दादा पढ़ते हैं? पहले बहुत पढ़ते थे। सुनी भी है सुनाई भी है। परन्तु अभी समझते हैं सभी झूठ ही झूठ था। अभी झू० खण्ड को तुमश्रीमत पर सच्च खण्डअथवा स्वर्ग बना रहे हो। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे तुम ही पद पावेंगे। जितना जो याद में रहेंगे चक्र फिरावेंगे तुम ही स्वर्ग के मालिक बनेंगे। हम तो आये हैं पढ़ाने। तुम जानते हो बाबा पढ़ाकर नई दुनिया में ले जावेंगे। तो सद्गुरु ठहरा ना। परन्तु माया घड़ी2 भूला देती है। यह है युध। तब बाप कहते हैंडरो मत। पिछाड़ी तक तूफान आवेंगे। एक संकल्प विकल्प होते हैं, दूसरी अच्छी होती है। विकल्प आये तो कर्मईन्द्रियों से कुछ न करो। अच्छा संकल्प भल आये। तूफान तो बहुत आवेंगे। जैसे वैद दवाई करते हैं कहते हैं बिमारी उथलेगी। तुम डरना नहीं। फिर कोई छोड़ देते हैं। यहां भी कहते हैं। कितने तूफान आते हैं जो कबन आया। ज्ञान में आने बाद माया बहुत तूफान में लाती है। हां इसमें डरना न है। महावीर बनो। तुम बच्चे ही महावीर हो। कितनी भी तूफान आयेअचल अडोले अखण्ड रहना है। यह भी अभी खुशी है हम अखण्ड राज्य स्थापन कर रहे हैं। कोई हाथ-पांव नहीं चलाते। लड़ाई की बात नहीं। सिर्फ अपने स्वीट मीठे बाप को याद करना है। जो ही तुम आत्माओं को पढ़ाते हैं। यहां बैठते हो तो भी अपने को आत्मा समझो। बाप कितना समझाते हैं जो कब कोई समझा न सके। आत्मा कितनी छोटी है। सा० होता है वह भी पुरुषार्थ करने लिये। सा० से कोई न बन जावेंगे। समझ है हमारे में छोटी सी आत्मा हैउनका पार्ट भरा हुआ है। ड्रामा के ढेर एक्टर्स हैं। सभी को पार्ट मिला हुआ है। सभी एक्टर्स हैं। सभी आत्माओं को पार्ट मिला हुआ है अनादि। शास्त्रों में यह बातें नहीं हैं। शास्त्रों में है धूकेवाना दरदरधक्का खाते हैं। वेदशास्त्र कितने भी पढ़े हुये हो परन्तु भगवान किसको भी मिलता नहीं। वह सब समझते हैं यह सभी भगवान से मिलने के रास्ते हैं। बाप समझाते हैं यह सभी भक्ति मार्ग में अनेक उपाय बताते हैं। बाप कहते हैं उपाय एक ही है। ज्ञान भक्ति वैराग्य। अभी तुम हो संगम युग पर। उस तरफ कितने थोड़ेमनुष्य होंगे। बाकी सभी आत्मायें शान्तिधाम में चली जावेंगी। तुम बाबा शान्तिधाम सुखधाम चले जावेंगे। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिला हुआ हैयह कौन है। यह कौन है। तुम सारे विश्व में शान्ति स्थापनकरते हो। तो तुमको यह ल०ना० का प्राईज मिलती है। तुम यह बनते हो ना। बाप ने समझाया है पिछाड़ी में सन्यासियों आदि पर जीत पावेंगे। अभी उनके पिछाड़ी पड़ने कोशिश भी मत करो। उनके फालोअर्स सभी कहेंगे इनको जादू लगा है। उन्हों के उठने का अभी समय नहीं है। तुम्हारी आस्ते2 राजधानी जमती जावेगी। अनेक बार तुमने राज्य किया है। और फिर गंवाया है। कैसे राजधानी ली है वह भी जानते जाते हो। दिनप्रति दिन एड होते जाते हैं। परन्तु माया तूफान में ले आती है तो छण जाते हैं। संगदोष गिरा देती है। तुम बच्चे यहां आते हो बापटीचर गुरु पास सम्मुख रिफ्रेश होकर जावें। दिल होती हैचटक कर बैठ जावें। परन्तु नहीं। वह फिर सन्यास हो जावेगा। गृहस्थ व्यवहार में कमलफुल समान पवित्र रहना है। अपने को आत्मा समझ और बाप को याद करना है। पुरानी दुनिया को भूल जाना है। बुद्धि से भूल जाना है। अच्छा बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

डायरेक्शन:- बाप दादा कहे किबच्चों को कोई भी त्योहार पर, शिवजयन्ति अथवा दीपावली, जन्माष्ठमी आदि कोई भी त्योहार परमधुवन में चार भेजने की जरूरत नहीं है।

(2) कभी भी टेलीफोन परप्रसनल पिताश्री के नाम पर टूंकाल नहीं करना है। बाप दादा तो कब फोन पर जोर सेबात करते नहीं हैं। आर्डीनरी कोल होने से भी बापदादा तो कहां से भी फोरन फोन पर आ ही जाते हैं।

*:-*********:-*